जिओ और जीने दो

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

विश्व के सभी देश अपनी सुरक्षा के लिए चिन्तित रहते हैं। इसलिए सेना पर अधिक खर्च करते हैं। प्रत्येक देश के नागरिक की सुरक्षा करना, वहां की सरकार का कर्तव्य है। आर्थिक, सामाजिक उन्नति के लिए अनेक प्रकार की योजनाएं बनाई जाती हैं, जिससे उस देश के नागरिक अच्छे ढंग से जीवनयापन कर सकें। जब देश में खुशहाली रहती है तो सभी लोग जीओ और जीने दो की भावना से कार्य करते हैं। इस संसार में मरना कोई नहीं चाहता। मृत्यु का नाम लेने से ही लोग घबरा जाते हैं। यदि सभी नागरिक वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से रहते हैं तो सभी खुशहाल जीवन व्यतीत करते हैं। भारतीय संस्कृति में यह स्वीकार किया गया है कि हमारे द्वारा किसी भी प्राणी को कष्ट न हो। न तो हम किसी प्राणी की हत्या करें और न कोई प्राणी मेरा नुकसान करें। यह तभी सम्भव है जब अहिंसा का प्रचार–प्रसार व्यापक रूप से हो।

भगवान् महावीर का यह सिद्धान्त है कि हर प्राणी का आदर करो– परस्परोपग्रहोजीवानाम्। इसका अर्थ है सभी प्राणी परस्पर मिलकर सहअस्तित्व के साथ रहे। कोई किसी से बैर न करे, कोई किसी से रागद्वेष न करे। यही इस सूत्र का हार्द्र है। यह संसार सबका है, किसी एक व्यक्ति या प्राणी का नहीं। इसलिए इसका उपभोग सभी संयम पूर्वक करें, कोई किसी के जीवन में हस्तक्षेप न करे। प्रकृति मानव को सभी वस्तुएं उपलब्ध करायी है। सूर्य का प्रकाश सभी लोगों के लिए है। वायु सभी के लिए है। सम्पूर्ण वायुमण्डल सभी के लिए है, आवश्यकता है इनके सदुपयोग की। यदि मानव त्यागपूर्वक इनका उपयोग करता है तो प्रकृति का खजाना कभी समाप्त होने वाला नहीं है। प्रकृति ने खूब दिया है, इसका त्यागपूर्वक उपयोग होना चाहिए। मानव एक सामाजिक प्राणी है स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ की चेतना उसमें समाहित है अहिंसा की वृत्ति भी उसके अंतर्गत है। अहिंसा का तात्पर्य है जीव हिंसा न करना। इसके

साथ ही साथ प्राणियों के साथ मैत्री, मुदिता, सहिष्णुता, समता आदि भी अहिंसा के ही पर्याय है। सादगी का भी अपना एक दर्शन है, इसे हम आत्मशांति का दर्शन कह सकते हैं।

यदि मनुष्य सभी प्राणियों के साथ मेल–जोल सद्‌भावना और समतापूर्वक रहता है तो उसके जीवन में शांति बनी रहती है। शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए सहअस्तित्व की कल्पना आवश्यक है। सहअस्तित्व का अर्थ है कि जीवन जितना हमे प्रिय है उतना ही अन्य प्राणियों को भी प्रिय है। आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् अर्थात् जो हमारे अनुकूल नहीं है वैसा आचरण हमें दूसरों के साथ भी नहीं करना चाहिए। यदि हम किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप किसी अन्य प्राणी के जीवन में करते है तो उसको दुःख होता है। इसलिए प्रेम से और सद्‌भावना से किसी भी प्राणी को वश में किया जा सकता है। अहिंसा से लेकर जियो और जीने दो का सिद्धान्त ही शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की मुख्य धुरी है। आचार शुद्धि, व्यवहार शुद्धि और विचार शुद्धि के आधार पर मनुष्य बिना किसी अतीन्द्रिय सत्ता के सहयोग से स्वयं को विकसित बना सकता है।

दया और करुणा का भाव ही शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के मूल में प्रतिष्ठित है। अतः शांतिपूर्ण सहअस्तित्व कोरा दर्शन न होकर जीवन दर्शन है, जो किसी भी जीव के अस्तित्व व गरिमा को स्थापित करता है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की संवेदना व दया, करुणा का भाव समस्त सृष्टि के जीवधारियों के लिए होता है। अतः अहिंसा इस दर्शन की प्रतिष्ठा के लिए सबसे अनिवार्य शर्त है। धर्म दर्शनों में धर्म के व्यावहारिक स्वरूप को मानव जीवन के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया है, इसलिए इन दर्शनों में धर्म के रूप में कर्म को प्रधानता दी गई है। मानव जीवन में उत्पन्न समस्याओं का व्यावहारिक समाधान एवं मनुष्य को ईश्वर तुल्य महत्ता प्रदान की गई है। इन दर्शनों में पारलौकिक उद्‌देश्यों की पूर्ति की अपेक्षा सांसारिक हितों की उपेक्षा नहीं की गई है। आध्यात्मिक लक्ष्य को स्वीकार करते हुए भी वर्तमान जीवन को उपेक्षित नहीं माना गया है। शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के अनुसार मानव जीवन का उद्देश्य मात्र इतना नहीं है कि वह सत्य का साक्षात्कार करे अपितु सत्य के साक्षात्कार के साथ–साथ उस व्यवहार, को भी सतत अपने जीवन में उतारे, जिसके आधार पर उसने सत्य बोध प्राप्त किया।

इसलिए भारत को सभी दर्शनों में तत्व मीमांसा के साथ–साथ आचार–मीमांसा का भी उतना ही महत्व है।

आवश्यकता से अधिक अर्जन करना दूसरों के हिस्से को छीनना है। रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और चिकित्सा सभी के लिए समान रूप से मिलनी चाहिए। भारत ही नही वरन् विश्व के सभी श्रेष्ठ चिंतकों, दार्शनिकों एवं समाज सुधारकों ने शांतिपूर्ण सहअस्तित्व को विकास के लिए आवश्यक माना है। इसरूप में संसार के सभी प्रमुख प्राचीन धर्म मानवतावाद की भूमिका पर प्रतिष्ठित हैं। प्रत्येक धर्म प्रवर्तक के मन में विश्व के प्राणियों के प्रति असीम संवेदना और करुणा का भाव रहा है। मानव के साथ–साथ प्रत्येक प्राणी शांति सौहार्द एवं सद्भावना के साथ जीवन निर्वाह कर सके यही उद्देश्य जियो और जीने दो के सिद्धान्त में है। भगवान् महावीर का जियो और जीने दो का सिद्धान्त जितना उस समय प्रासंगिक था उतना आज भी प्रासंगिक है। यह सिद्धान्त अहिंसा का पोषक है।